अध्याय 2

आरंभिक मानव की खोज में

तुषार की रेलयात्रा

तुषार अपने एक रिश्तेदार की शादी में दिल्ली से चेन्नई जा रहा था। रेल में उसे खिड़की वाली सीट मिल गई, जहाँ से वह बाहर का नज़ारा देखने में मग्न हो गया। तेज़ दौड़ती गाड़ी से उसने देखा कि पेड़-पौधे, घर, खेत-खलिहान बड़ी तेज़ी से पीछे की ओर छूटते चले जा रहे थे। तभी उसके चाचा ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा, "पता है लोगों ने मात्र डेढ़ सौ साल पहले रेल से यात्रा करनी शुरू की थी? बस तो इसके कुछ दशक बाद आई।" तुषार सोचने लगा, कि जब लोगों के पास आने-जाने के लिए तेज़ रफ़्तार वाली सवारियाँ नहीं थीं, तो क्या वे यात्रा ही नहीं करते थे। क्या वे अपनी सारी ज़िंदगी एक ही जगह पर बिता दिया करते थे? नहीं, ऐसी बात नहीं थी।

आरंभिक मानव : आखिर वे इधर-उधर क्यों घूमते थे?

हम उन लोगों के बारे में जानते हैं, जो इस उपमहाद्वीप में बीस लाख साल पहले रहा करते थे। आज हम उन्हें *आखेटक-खाद्य संग्राहक* के नाम से जानते हैं। भोजन का इंतज़ाम करने की विधि के आधार पर उन्हें इस नाम से पुकारा जाता है। आमतौर पर खाने के लिए वे जंगली जानवरों का शिकार करते थे, मछलियाँ और चिड़िया पकड़ते थे, फल-मूल, दाने, पौधे-पत्तियाँ, अंडे इकट्ठा किया करते थे। हमारे उपमहाद्वीप जैसे गर्म देशों में पेड़-पौधों की अनगिनत प्रजातियाँ मिलती हैं। इसीलिए पेड़-पौधों से मिलने वाले खाद्य पदार्थ भोजन के अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत थे।

लेकिन यह सब कर पाना बिल्कुल आसान नहीं था। ऐसे कई जानवर हैं, जो हमसे ज़्यादा तेज़ भाग सकते हैं और बहुत-से जानवर हम से ज़्यादा ताकतवर भी होते हैं। जानवरों के शिकार, चिड़िया या मछलियाँ पकड़ने के लिए बड़ा सतर्क, जागरूक और तेज़ होना पड़ता है। पेड़-पौधों से खाना जुटाने के लिए यह जानना जरूरी होता है, कि कौन-से पेड़-पौधे खाने योग्य होते हैं, क्योंकि कई तरह के पौधे विषैले भी होते हैं। साथ ही फलों के पकने के समय की जानकारी भी ज़रूरी होती है।

© NCERT not to be republished

ऐसे समुदायों में रहने वाले बच्चों के ज्ञान और गुणों का वर्णन करो।

क्या तुममें ऐसे गुण और ज्ञान हैं?

आखेटक-खाद्य संग्राहक समुदाय के लोगों के एक जगह से दूसरी जगह पर घूमते रहने के पीछे कम से कम चार कारण हो सकते हैं।

पहला कारण यह कि अगर वे एक ही जगह पर ज़्यादा दिनों तक रहते तो आस-पास के पौधों, फलों और जानवरों को खाकर समाप्त कर देते थे। इसलिए और भोजन की तलाश में इन्हें दूसरी जगहों पर जाना पड़ता था।

दूसरा कारण यह कि जानवर अपने शिकार के लिए या फिर हिरण और मवेशी अपना चारा ढूँढ़ने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाया करते हैं। इसीलिए, इन जानवरों का शिकार करने वाले लोग भी इनके पीछे-पीछे जाया करते होंगे।

तीसरा कारण यह कि पेड़ों और पौधों में फल-फूल अलग-अलग मौसम में आते हैं, इसीलिए लोग उनकी तलाश में उपयुक्त मौसम के अनुसार अन्य इलाकों में घूमते होंगे।

और चौथा कारण यह है कि पानी के बिना किसी भी प्राणी या पेड़-पौधे का जीवित रहना संभव नहीं होता और पानी झीलों, झरनों तथा नदियों में ही मिलता है। यद्यपि कई नदियों और झीलों का पानी कभी नहीं सूखता, कुछ झीलों और नदियों में पानी बारिश के बाद ही मिल पाता है। इसीलिए ऐसी झीलों और नदियों के किनारे बसे लोगों को सूखे मौसम में पानी की तलाश में इधर-उधर जाना पड़ता होगा। इसके अलावा लोग अपने नाते-रिश्तेदारों या मित्रों से मिलने भी जाया करते होंगे। यहाँ यह स्मरण रखना ज़रूरी है, कि ये सभी लोग पैदल यात्रा किया करते थे।

तुम स्कूल कैसे जाते हो?

तुम्हें अपने घर से स्कूल पैदल जाने में कितना समय लगता है?

अगर तुम बस या साइकिल से जाओ तो स्कूल पहुँचने में कितना समय लगेगा?

आरंभिक मानव के बारे में जानकारी कैसे मिलती है?

पुरातत्त्वविदों को कुछ ऐसी वस्तुएँ मिली हैं जिनका निर्माण और उपयोग आखेटक-खाद्य संग्राहक किया करते थे। यह संभव है कि लोगों ने अपने

© NCERT not to be republished

पत्थर से बने औज़ार

(क) ये पत्थरों से बने प्राचीनतम औज़ार हैं।

(ख) इन्हें कई हज़ार साल बाद बनाया गया।

(ग) इन्हें और बाद में बनाया गया।

(घ) इन्हें लगभग 10 हज़ार साल पहले बनाया गया था।

(ङ) और ये गुटिका (प्राकृतिक पत्थर) हैं।

काम के लिए पत्थरों, लकड़ियों और हड्डियों के औज़ार बनाए हों। इनमें से पत्थरों के औज़ार आज भी बचे हैं।

यहाँ पत्थरों के औज़ारों के कुछ उपयोग बताए गए हैं। ऐसे कामों की एक सूची बनाओ जिनमें इस तरह के औज़ार काम आते हैं। बताओ कि इनमें से कौन-कौन से काम सामान्य पत्थरों से किए जा सकते हैं। कारण सहित उत्तर दो।

इनमें से कुछ औज़ारों का उपयोग फल-फूल काटने, हड्डियाँ और मांस काटने तथा पेड़ों की छाल और जानवरों की खाल उतारने के लिए किया जाता था। कुछ के साथ हड्डियों या लकड़ियों के मुट्ठे लगा कर भाले और बाण जैसे हथियार बनाए जाते थे। कुछ औज़ारों से लकड़ियाँ काटी जाती थीं। लकड़ियों का उपयोग ईंधन के साथ-साथ झोपड़ियाँ और औज़ार बनाने के लिए भी किया जाता था।

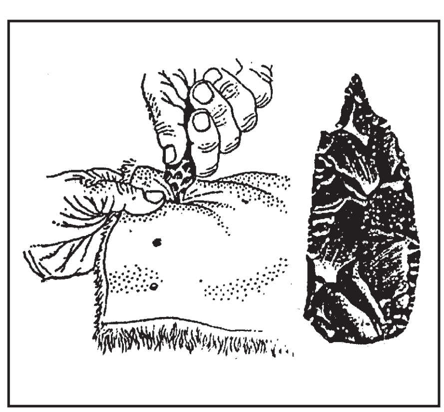

पत्थर के औज़ारों का उपयोग बाएँ : इंसान के खाने योग्य जड़ों को खोदने के लिए किया जाता था, और दाएँ : जानवरों की खाल से बने वस्त्रों को सिलने के लिए किया जाता था।

© NCERT not to be republished

रहने की जगह निर्धारित करना

मानचित्र 2 को देखो। लाल त्रिकोण वाले स्थान वे *पुरास्थल* हैं जहाँ पर आखेटक-खाद्य संग्राहकों के होने के प्रमाण मिले हैं। इनके अलावा भी और कई स्थानों पर आखेटक-खाद्य संग्राहक रहते थे। मानचित्र में सिर्फ़ कुछ गिने-चुने स्थान ही चिह्नित किए गए हैं। कई पुरास्थल नदियों और झीलों के किनारे पाए गए हैं।

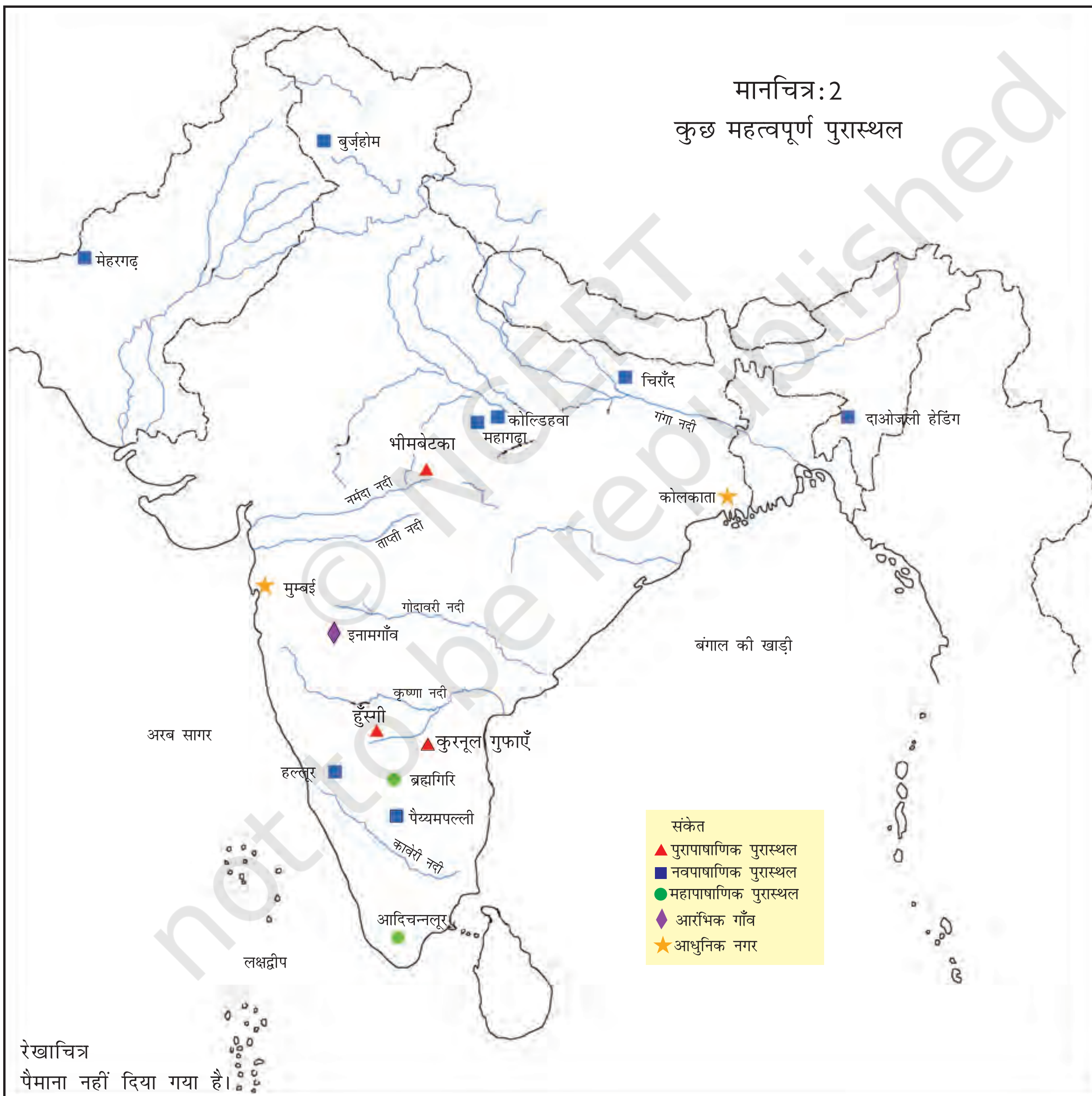

मानचित्र: 2
कुछ महत्वपूर्ण पुरास्थल

not to be republished © NCERT

चूंकि पत्थर के उपकरण बहुत महत्वपूर्ण थे इसलिए लोग ऐसी जगह ढूँढ़ते रहते थे, जहाँ अच्छे पत्थर मिल सकें। जहाँ लोग पत्थरों से औज़ार बनाते थे, उन स्थलों को *उद्योग-स्थल* कहते हैं।

हमें इन उद्योग-स्थलों के बारे में जानकारी कैसे मिलती है? आमतौर पर हमें ऐसी जगहों पर पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े मिलते हैं, और ऐसे उपकरण मिलते हैं, जिन्हें लोग इन स्थलों पर छोड़ गए होंगे क्योंकि वे ठीक नहीं बने होंगे। साथ ही औज़ार बनाने के बाद पत्थरों के टूटे-फूटे टुकड़े भी इन स्थलों पर मिलते हैं। कभी-कभी लोग इन स्थलों पर कुछ ज़्यादा समय तक रहा करते थे। ऐसे स्थलों को *आवासीय और उद्योग-स्थल* कहते हैं।

भीमबेटका (आधुनिक मध्य प्रदेश)
आवासीय पुरास्थल उन्हें कहते हैं जहाँ लोग रहा करते थे। इनमें गुफाओं और कन्दराओं जैसे वे स्थल होते हैं, जिन्हें यहाँ दर्शाया गया है। लोग इन गुफाओं में इसलिए रहते थे, क्योंकि यहाँ उन्हें बारिश, धूप और हवाओं से राहत मिलती थी। ऐसी प्राकृतिक गुफाएँ विंध्य और दक्कन के पर्वतीय इलाकों में मिलती हैं जो नर्मदा घाटी के पास हैं।
क्या तुम बता सकते हो कि रहने के लिए लोगों ने यह जगह क्यों चुनी होगी?

© NCERT not to be republished

अगर तुम्हें अपने निवास स्थान के बारे में बताना पड़े तो तुम इनमें से कौन-सा नाम चुनोगे?

(क) आवास

(ख) उद्योग-स्थल

(ग) आवास और उद्योग-स्थल

(घ) अन्य

पुरास्थल

पुरास्थल उस स्थान को कहते हैं जहाँ औज़ार, बर्तन और इमारतों जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते हैं। ऐसी वस्तुओं का निर्माण लोगों ने अपने काम के लिए किया था और बाद में वे उन्हें वहीं छोड़ गए। ये ज़मीन के ऊपर, अन्दर, कभी-कभी समुद्र और नदी के तल में भी पाए जाते हैं। इन पुरास्थलों के बारे में आपको अगले अध्यायों में बताया जाएगा।

पाषाण औज़ारों का निर्माण

पाषाण उपकरणों को प्रायः दो तरीकों से बनाया जाता था।

1. पत्थर से पत्थर को टकराना। यानी जिस पत्थर से कोई औज़ार बनाना होता था, उसे एक हाथ में लिया जाता था, और दूसरे हाथ से एक पत्थर का हथौड़ी जैसा इस्तेमाल होता था। इस तरह आघात करने वाले पत्थर से दूसरे पत्थर पर तब तक शल्क निकाले जाते हैं जब तक वांछित आकार वाला उपकरण न बन जाए।

2. दूसरे तरीके को 'दबाव शल्क-तकनीक' कहा जाता है। इसमें क्रोड को एक स्थिर सतह पर टिकाया जाता है और इस क्रोड पर हड्डी या पत्थर रखकर उस पर हथौड़ीनुमा पत्थर से शल्क निकाले जाते हैं जिससे वांछित उपकरण बनाए जाते हैं।

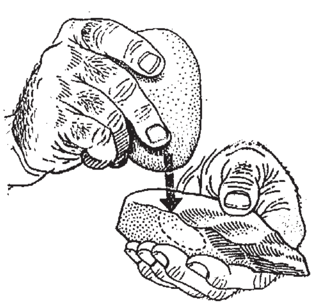

पाषाण उपकरण कैसे बनाए जाते थे। इसके लिए अपनाई गई दो तकनीकों में से एक यहाँ दर्शाई गई है। *बताओ यह कौन-सी तकनीक है।*

आग की खोज

मानचित्र 2 में कुरनूल गुफा ढूँढ़ो (पृष्ठ 14)। यहाँ राख के अवशेष मिले हैं। इसका मतलब यह है कि आरंभिक लोग आग जलाना सीख गए थे। आग का इस्तेमाल कई कार्यों के लिए किया गया होगा जैसे कि प्रकाश के लिए, मांस भूनने के लिए और खतरनाक जानवरों को दूर आदि भगाने के लिए।

© NCERT not to be republished

आज हम आग का उपयोग किसलिए करते हैं?

बदलती जलवायु

लगभग 12,000 साल पहले दुनिया की जलवायु में बड़े बदलाव आए और गर्मी बढ़ने लगी। इसके परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में घास वाले मैदान बनने लगे। इससे हिरण, बारहसिंघा, भेड़, बकरी और गाय जैसे उन जानवरों की संख्या बढ़ी, जो घास खाकर ज़िन्दा रह सकते हैं।

जो लोग इन जानवरों का शिकार करते थे, वे भी इनके पीछे आए और इनके खाने-पीने की आदतों और प्रजनन के समय की जानकारी हासिल करने लगे। हो सकता है कि तब लोग इन जानवरों को पकड़ कर अपनी ज़रूरत के अनुसार पालने की बात सोचने लगे हों। साथ ही इस काल में मछली भी भोजन का महत्वपूर्ण स्रोत बन गई।

इसी दौरान उपमहाद्वीप के भिन्न-भिन्न इलाकों में गेहूँ, जौ और धान जैसे अनाज प्राकृतिक रूप से उगने लगे थे। शायद महिलाओं, पुरुषों और बच्चों ने इन अनाजों को भोजन के लिए बटोरना शुरू कर दिया होगा।

नाम और तिथियाँ

हम जिस काल के बारे में पढ़ रहे हैं, पुरातत्त्वविदों ने उनके बड़े-बड़े नाम रखे हैं। आरंभिक काल को वे *पुरापाषाण काल* कहते हैं। यह दो शब्दों पुरा यानी 'प्राचीन', और पाषाण यानी 'पत्थर' से बना है। यह नाम पुरास्थलों से प्राप्त पत्थर के औज़ारों के महत्त्व को बताता है। पुरापाषाण काल बीस लाख साल पहले से 12,000 साल पहले के दौरान माना जाता है। इस काल को भी तीन भागों में विभाजित किया गया है : 'आरंभिक', 'मध्य' एवं 'उत्तर' पुरापाषाण युग। मानव इतिहास की लगभग 99 प्रतिशत कहानी इसी काल के दौरान घटित हुई।

जिस काल में हमें पर्यावरणीय बदलाव मिलते हैं, उसे 'मेसोलिथ' यानी *मध्यपाषाण युग* कहते हैं। इसका समय लगभग 12,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले तक माना गया है। इस काल के पाषाण औज़ार आमतौर पर बहुत छोटे होते थे। इन्हें 'माइक्रोलिथ' यानी *लघुपाषाण* कहा जाता है। प्रायः इन औज़ारों में हड्डियों या लकड़ियों के मुट्ठे लगे हँसिया और आरी जैसे औज़ार मिलते थे। साथ-साथ पुरापाषाण युग वाले औज़ार भी इस दौरान बनाए जाते रहे।

पृष्ठ 13 पर बने चित्र देखो। इस दौरान बनाए गए औज़ारों में तुम्हें कोई बदलाव दिखाई देता है?

अगले युग की शुरुआत लगभग 10,000 साल पहले से होती है। इसे *नवपाषाण युग* कहा जाता है। अगले अध्याय में तुम नवपाषाण युग के बारे में पढ़ोगे।

नवपाषाण का क्या मतलब होता होगा?

हमने कुछ स्थानों के नाम दिए हैं। अगले अध्यायों में तुम्हें ऐसे अनेक नाम मिलेंगे। अक्सर हम पुराने स्थानों के लिए उन नामों का प्रयोग करते हैं, जो आज प्रचलित हैं, क्योंकि हमें ज्ञात नहीं है कि उस काल में इनके क्या नाम रहे होंगे।

© NCERT not to be republished

साथ ही वे यह भी सीखने लगे होंगे कि यह अनाज कहाँ उगते थे और कब पककर तैयार होते थे। ऐसा करते-करते लोगों ने इन अनाजों को खुद पैदा करना सीख लिया होगा।

शैल चित्रकला : इनसे हमें क्या पता चलता है?

एक शैल चित्र।
इस चित्र के बारे में बताओ।

जिन गुफाओं में लोग रहते थे, उनमें से कुछ की दीवारों पर चित्र मिले हैं। इनमें कुछ सुन्दर उदाहरण मध्य प्रदेश और दक्षिणी उत्तर प्रदेश की गुफाओं से मिले चित्र हैं। इनमें जंगली जानवरों का बड़ी कुशलता से सजीव चित्रण किया गया है।

कौन क्या करता था?

हमने पढ़ा कि आरंभिक लोग शिकार तथा फल-मूल का संग्रह किया करते थे। वे पत्थरों के औज़ार और गुफाओं में चित्र बनाते थे। क्या हमें कोई ऐसे साक्ष्य मिलते हैं जिनसे पता चले कि महिलाएँ शिकार करती थीं या पुरुष औज़ार बनाते थे या फिर महिलाएँ चित्रकारी करती थीं और पुरुष फल-मूल इकट्ठा करते थे? वास्तव में, हमें इसका ज्ञान नहीं है। लेकिन दो बातें हो सकती हैं। महिला और पुरुष दोनों ने मिलकर कई काम एक साथ किया होगा। यह भी संभव है, कि कुछ तरह के काम केवल महिलाएँ करती थीं और कुछ केवल पुरुष। इसके अलावा उपमहाद्वीप के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग परम्पराएँ भी रही होंगी।

भारत में शुतुरमुर्ग!

भारत में पुरापाषाण युग के दौरान शुतुरमुर्ग होते थे। महाराष्ट्र के पटने पुरास्थल से शुतुरमुर्ग के अंडों के अवशेष मिले हैं। इनके कुछ छिलकों पर चित्रांकन भी मिलता है। इन अंडों से मनके भी बनाए जाते थे।

इन मनकों का उपयोग किसलिए किया गया होगा?

आज हमें शुतुरमुर्ग कहाँ मिलते हैं?

हुँस्गी का सूक्ष्म-निरीक्षण

मानचित्र 2 पर हुँस्गी ढूँढ़िए (पृष्ठ 14)। यहाँ पर पुरापाषाण युग के कई पुरास्थल मिले थे। कुछ पुरास्थलों से अलग-अलग कार्यों में लाए जाने वाले

© NCERT not to be republished

कई प्रकार के औज़ार मिले थे। ये संभवत: आवास और उद्योग-स्थल रहे होंगे। कुछ छोटे पुरास्थलों में भी औज़ारों के बनाए जाने के प्रमाण मिले हैं। इनमें से कुछ पुरास्थल झरनों के निकट थे। अधिकांश औज़ार चूना-पत्थरों से बनाए जाते थे।

क्या तुम दूसरे प्रकार के पुरास्थलों के नाम बता सकते हो?

अन्यत्र

अपने एटलस में फ्रांस ढूँढ़ो। यह चित्र फ्रांस की एक गुफा का है। इस पुरास्थल की खोज लगभग 100 साल पहले चार स्कूली छात्रों ने की थी। इस तरह के चित्र लगभग 20,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले के बीच बनाए गए होंगे। इनमें कई जानवरों के चित्र हैं। इनमें जंगली घोड़े, गाय, भैंस, गैंडा, रेनडीयर, बारहसिंघा और सूअरों को गहरे-चमकीले रंगों से चित्रित किया गया है।

इन रंगों को लौह-अयस्क और चारकोल जैसे खनिज पदार्थों से बनाया जाता था। यह संभव है कि इन चित्रों को उत्सवों के अवसर पर बनाया जाता था या फिर इन्हें शिकारियों द्वारा शिकार पर निकलने से पहले कुछ अनुष्ठानों के लिए बनाया गया होगा।

क्या तुम इन्हें बनाने का कोई और कारण बता सकते हो?

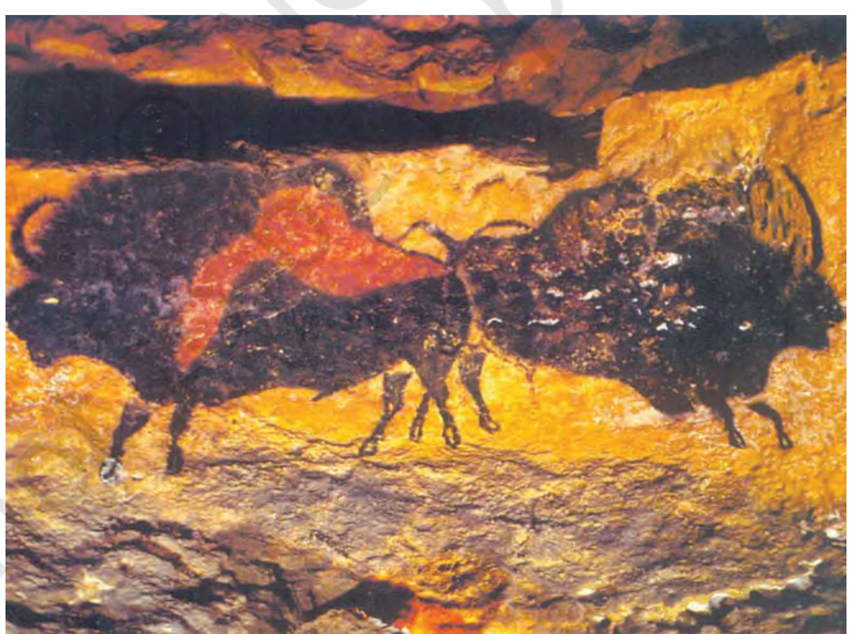

कल्पना करो

तुम आज से 12,000 साल पहले पत्थर की एक गुफा में रहते हो। पृष्ठ 15 पर देखो। तुम्हारे मामा गुफा की एक भीतरी दीवार पर चित्र बना रहे हैं और तुम उनकी सहायता करना चाहते हो। तुम रंग बनाओगे, रेखाएँ खींचोगे या फिर उनमें रंग भरोगे? तुम्हारे मामा तुम्हें कौन-कौन सी कहानियाँ सुनाएँगे?

उपयोगी शब्द

आखेटक-खाद्य संग्राहक
पुरास्थल
उद्योग-स्थल
आवासीय-स्थल
पुरापाषाण
मध्यपाषाण
लघुपाषाण

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- मध्यपाषाण युग (12,000-10,000 साल पहले)
- नवपाषाण युग का आरंभ (10,000 साल पहले)

आओ याद करें

1. इन वाक्यों को पूरा करो।

   (क) आखेटक-खाद्य संग्राहक गुफाओं में इसलिए रहते थे क्योंकि ——।

   (ख) घास वाले मैदानों का विकास —————— साल पहले हुआ।

   (ग) आरंभिक लोगों ने गुफाओं की —————— पर चित्र बनाए।

   (घ) हुँस्गी में —————— से औज़ार बनाए जाते थे।

2. उपमहाद्वीप के आधुनिक राजनीतिक मानचित्र को पृष्ठ 136 पर देखो। उन राज्यों को ढूँढ़ो जहाँ भीमबेटका, हुँस्गी और कुरनूल स्थित हैं। क्या तुषार की रेल इन जगहों के पास से होकर गई होगी?

आओ चर्चा करें

3. आखेटक-खाद्य संग्राहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे? उनकी यात्रा और आज की हमारी यात्रा के कारणों में क्या समानताएँ या क्या भिन्नताएँ हैं?

© NCERT not to be republished

4. आज तुम फल काटने के लिए कौन-से औज़ार चुनोगे? वह औज़ार किस चीज़ से बना होगा?

5. आखेटक-खाद्य संग्राहक आग का उपयोग किन-किन चीज़ों के लिए करते थे? क्या तुम आज आग का उपयोग इनमें से किसी चीज़ के लिए करोगे!

आओ करके देखें

6. अपनी पुस्तिका के पन्ने पर एक लाइन खींचकर इसके दो खाने बनाओ। बाएँ खाने में, उन खाद्य पदार्थों की सूची बनाओ, जिन्हें आखेटक-खाद्य संग्राहक खाते थे (पृष्ठ 11 पर देखो) और दाएँ खाने में तुम जो चीज़ें खाते हो उनमें से कुछ के नाम लिखो। क्या तुम्हें इन दोनों में कोई समानता या भेद दिखाई देता है?

7. यदि तुम्हारे पास कोई गुटिका (प्राकृतिक पत्थर का टुकड़ा, जैसे कि (पृष्ठ 13 पर दिखाया गया है) हो तो उसे किस काम के लिए इस्तेमाल करोगे?

8. ऐसे दो काम लिखो जिन्हें आज महिलाएँ और पुरुष दोनों करते हैं। दो ऐसे काम बताओ जिन्हें सिर्फ़ महिलाएँ ही करती हैं और दो वे जिन्हें सिर्फ़ पुरुष ही करते हैं। अपनी सूची की अपने दो साथियों की सूचियों से तुलना करो। क्या तुम्हें इनमें कोई समानता या भेद दिखाई दे रहा है?

© NCERT not to be republished